श्री हनुमान चालीसा

श्री गुरु चरन सरोज रज,
निज मनु मुकुल सुधारि ।
बरनऊं रघुवर विमल जसु,
जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौ पवन कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि,
हरहु कलेष विकार ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।
जय कपीस तिहु लोक उजागर ॥ 1 ॥

राम दूत अतुलित बल धामा ।
अन्जनि–पुत्र पवनसुत नामा ॥ 2 ॥

महावीर विक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥ 3 ॥

कंचन वरन विराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥ 4 ॥

हाथ वज्र अरु ध्वजा विराजै ।
कान्धे मूंज जनेऊ साजे ॥ 5 ॥

शंकर सुवन केसरी नंदन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥ 6 ॥

www.YouSigma.com

विद्यावान गुणी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥ 7 ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ॥ 8 ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
विकट रूप धरि लंका जरावा ॥ 9 ॥

भीम रूप धरि असुर संहारे ।
रामचंद्र के काज संवारे ॥ 10 ॥

लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥ 11 ॥

रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥ 12 ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावें ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥ 13 ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥ 14 ॥

यम कुबेर दिगपाल जहां ते ।
कवि कोबिद कहि सके कहां ते ॥ 15 ॥

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा ।
राम मिलाये राजपद दीन्हा ॥ 16 ॥

www.YogSigma.com

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना ।
लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥ 17 ॥

युग सहस्र योजन पर भानु ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानु ॥ 18 ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लांघि गये अचरज नाहीं ॥ 19 ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ 20 ॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ 21 ॥

सब सुख लहै तुम्हारी शरना ।
तुम रक्षक काहु को डरना ॥ 22 ॥

आपन तेज सम्हारौ आपै ।
तीनों लोक हांकते कांपे ॥ 23 ॥

भूत पिशाच निकट नहिं आवै ।
महावीर जब नाम सुनावै ॥ 24 ॥

नासै रोग हरै सब पीरा ।
जगत निरंतर हनुमत बीरा ॥ 25 ॥

संकट ते हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥ 26 ॥

www.YouSigma.com

सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिनके काज सकल तुम साजा ॥ 27 ॥

और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोई अमित जीवन फल पावै ॥ 28 ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ 29 ॥

साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥ 30 ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
असबर दीन जानकी माता ॥ 31 ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ 32 ॥

तुम्हरे भजन राम को भावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥ 33 ॥

अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहां जन्म हरि भक्त कहाई ॥ 34 ॥

और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥ 35 ॥

संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥ 36 ॥

www.YouSigma.com

जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ॥ 37 ॥

जो शत बार पाठ कर कोई ॥
छूटहि बंधि महा सुख होई ॥ 38 ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होई सिद्धि साखी गौरीसा ॥ 39 ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥ 40 ॥

www.YoSigma.com

पवनतनय संकट हरन,
मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित,
हृदय बसहु सुर भूप ॥